भक्तिकाल में चैतन्य महाप्रभु का वर्णन

भारतवर्ष मे भक्तिकाल की समय–सीमा 1375 विक्रम संवत से लेकर 1700 विक्रम संवत तक माना गया है। भक्तिकाल में महाप्रभु चैतन्य का महत्वपूर्ण स्थान 'है। भक्तिकाल का प्रारम्भ भारतवर्ष में इस्लाम धर्म के आगमन के बाद हुआ जिसमें कवियों, समाज सुधारकों एवं धार्मिक आंदोलनकारियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उन्हीं समाज में चैतन्य महाप्रभु का सर्वोत्तम स्थान है।

भक्ति आंदोलन के संबंध में एक आध्यात्मिक अनुसंधान है, जिसके माध्यम से मनुष्य आदि शक्ति के विषय में ज्ञान प्राप्त करना है। विश्व के सभी धार्मों का मुख्य उद्देश्य भगवान के विषय में ज्ञान प्राप्त करना है।

भारतवर्ष में इस्लाम धर्म के प्रचार–प्रसार के कारण सनातन धर्म कमजोर एवं पतन के कगार पर आ गया था। मुस्लमान शासकों ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और धर्म को समाप्त करने में लग गए। मंदिरों और मूर्तियों को तोड़कर नष्ट कर दिया। ऐसी परस्थिति में भक्तिकाल में अनेक साधु संतों का भारत के पावन धरती पर अवतार हुआ।

चैतन्य महाप्रभु का जन्म 18 फरवरी, 1486 को पश्चिम बंगाल के नदिया नामक ग्राम में हुआ था। इनका जन्म संध्या काल में सिंह लग्न में चंद्र ग्रहण के समय हुआ था जिस समय इनका जन्म हुआ था उसे समय बहुत से लोग शुद्धि की कामना से हरि नाम जपते हुए गंगा स्नान को जा रहे थे उस समय लोगों ने भविष्यवाणी करते हुए कहा की यह बालक जीवन पर्यंत हरि नाम का प्रचार करेगा। उनका बचपन का नाम विश्वंभर था परंतु सभी इन्हें निमाई कह कर पुकारते थे महाप्रभु चैतन्य नीम पेड़ के नीचे मिले थे जिनके कारण लोग इन्हें गौरांग और हरि गौर सुंदर आदि भी कहते थे।

चैतन्य महाप्रभु बैष्णव धर्म के भक्ति योग के परम प्रचारक एवं भक्ति काल के प्रमुख कवियों में से एक हैं। इन्होंने बैष्णवों के गौडीय सम्प्रदाय की आधारशीला रखी, भजन गायकी के एक नये प्रकार को विकसित किया तथा राजनीतिक अस्थिरता के दिनों में हिंदू–मुस्लिम एकता की सद्भावना को बल दिया, जात–पात, उच्च–नीच की भावना की दूर करने की शिक्षा दी।

चैतन्य महाप्रभु जिस समय अपना उपदेश लेकर समाज के रंगमंच पर आए थे उसी समय बंगाल में गोरखपंथी विचारों का अधिक प्रभाव था तथा बौद्ध धर्म पतन की ओर जा रहा था यहां तक बंगाल के चारों तरफ सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक पतन का वातावरण व्याप्त था। बंगाल पूर्ण रूप से मुस्लिम प्रशासन का अंग बन गया था। मुस्लिम प्रशंसकों ने धर्म परिवर्तन के लिए हिंदुओं को अनेक प्रलोभन दे रहे थे।

डी० सी० सेन के अनुसार – *"ऐसे अंधकार युग में एक ऐसे सुधारक की आवश्यकता थी जो यह बता सके कि कर्म और ज्ञान की अपेक्षा भक्ति मोक्ष का सरल साधन है, जो भ्रातृत्व के भावना के आधार पर सबको सामाजिक एकता के सूत्र में बांध सके।"*

चैतन्य का कबीर और नानक के भांति मुख्य उद्देश्य सामाजिक असमानता को दूर करना साथ ही साथ शूद्रों के समानता का अधिकार देकर इस्लाम धर्म स्वीकार करने से रोकना। इस प्रकार से सामाजिक कुरीतियों को दूर कर ब्राह्मणों के प्रभुत्व को समाप्त करना चाहते थे।

चैतन्य का आध्यात्मिक दृष्टिकोण

चैतन्य राम और विष्णु के स्थान पर कृष्ण को अपना आराध्यदेव बनाया। इनके भक्ति भावना के नौ प्रमुख सिद्धांत हैं जो इस प्रकार से हैं :–

1. *एकेश्वरवाद :— महाप्रभु चैतन्य का विश्वास एकेश्वरवाद में था इनका कथन था कि हरि के अलावे दूसरा कोई नहीं है।*
2. *आदिशक्ति :— महाप्रभु चैतन्य अपने इष्ट देवहरि के आदिशक्ति को मानता थे।*
3. *रस—सागर :— रस का अर्थ भक्त एवं आराध्य देव का प्रेम है इसके कई भेद हैं स्थाई भाव, विभव, अनुभव, सात्विक।*
4. *जीवात्मा :— महाप्रभु चैतन्य के भक्तों का आवागमन में विश्वास था जो आत्मा—माया के कर्म चक्र में बंधी हुई है*
5. *प्रकृतिक में बंधा हुआ :— महाप्रभु चैतन्य का कहना है प्राकृतिक ईश्वरीय प्रधान परपंच में फंसी हुई आत्मा है।*
6. *प्रकृतिक के बंधन से मुक्त :— धर्म, योग, हरिभक्त, वैराग्य रस तथा कृष्ण भक्ति रस में आत्मा प्रकृति के बंधन से मुक्त होती है।*
7. *हरि का अचिन्त्य प्रकाश :— महाप्रभु चैतन्य का कहना है कि परमात्मा आत्मा से भिन्न है, फिर भी दोनों का अंश एक है। ईश्वर अपरिवर्तनीय है तथा जाति उसकी कृति है।*
8. *भक्ति :— महाप्रभु चैतन्य के कथा अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए कर्म तथा ज्ञान मार्ग अत्यंत कठिन है। अतः उन्होंने भक्ति की प्रधानता को मोक्ष के लिए एक मात्र साधन बताया, वे इस प्रकार है।*

I. *हरि के नाम, स्वरूप तथा गुण को सुनना।*
II. *उनके नाम तथा गुणों का गीत गाना।*
III. *उनके नाम तथा गुणों का ध्यान करना।*
IV. *उनके चरणों की सेवा करना।*
V. *उनकी आराधना या पूजा करना।*
VI. *उन्हें आत्मसमर्पण करना।*
VII. *मैत्री भाव।*

संसार से वैराग्य लेकर उनके चरणों में पूर्ण समर्पण करना।

चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति तथा उनके बाल लीला का ध्यान ही मोक्ष का एकमात्र साधन बताया है। चैतन्य महाप्रभु स्वयं एक संन्यासी थे लेकिन वह कभी नहीं चाहते थे कि उनके प्रिय शिष्य गृहस्थ का परित्याग करके मोक्ष के लिए संन्यासी बने।

उन्होंने अपने प्रिय शिष्य नित्यानंद को संन्यास छोड़कर शादी तथा गृहस्थ जीवन के लिए प्रोत्साहित किया। महाप्रभु ने मोक्ष प्राप्ति के लिए गुरु की आवश्यकता पर जोर दिया तथा ब्राह्मणों के धार्मिक संस्कारों की कटु आलोचना की।

समाज सुधारक

चैतन्य महाप्रभु ने केवल धर्म सुधारक बल्कि एक मध्ययुगीन समाज सुधारक भी थे। जिस समय इनका जन्म बंगाल के पावन धरती पर हुआ था उस समय भारत के समाज में जाति–पाति, उच्च–नीच और छुआछूत बहुत फैला हुआ था। इस कारण कुलीन वर्ग एवं ऊंची जाति के अत्याचार से दलित वर्ग के लोग इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिए थे जिसके कारण हमारे देश की सभ्यता, संस्कृति और धर्म समाप्त हो गया था। मुस्लिम आक्रमणों के कारण हमारे देश के मंदिरों और मूर्तियों को तोड़कर अपवित्र कर दिया ऐसी विकट स्थिति में सनातन धर्मियों को एकमात्र साधन भक्ति भावना के रूप में ईश्वर के प्रति लीन हो जाना एकमात्र ही रास्ता था।

समन्वयवाद एवं मानवतावाद

इस्लाम का प्रभाव संपूर्ण बंगाल पर था जो किसी भी समाज सुधारकों के लिए जटिल समस्या थी ऐसी स्थिति में हिंदू मुस्लिम संप्रदायों के बीच सौहाद्रपूर्ण वातावरण पैदा किया जाए तभी हमारे देश की सभ्यता, संस्कृति और धर्म बच सकती है।

इस प्रकार उनके हृदय में मुसलमान के प्रति प्रगाढ़ प्रेम था। हरिदास ने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया था परंतु चैतन्य ने उन्हें अपना शिष्य बनाया। चैतन्य महाप्रभु मानवतावादी ही थे। उन्हें दलित और पीछड़े वर्गों के लोगों की सेवा को अपना मुख्य लक्ष्य बनाया था।

पीड़ित जन समुदाय की हालत को देखकर उनके कष्टों का अनुभव करके चैतन्य महाप्रभु आंसू बहाते रहते थे। मानव सेवा के माध्यम से उन्हें ने प्रेम सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

श्रीमती बेबरीज के अनुसार *:– "चैतन्य मार्टिन लूथर की भांति धर्म में मूल परिवर्तन नहीं बल्कि जार्ज नाक्स की तरह धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर सुधार करना चाहते थे।*

कबीर तथा गुरु नानक की भांति चैतन्य ने भी धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को अध्ययन कर समय की आवश्यकता अनुसार सुधार का नारा लगाया।

विक्रम संवत् 1509 ईस्वी में जब वे अपने पिता का श्राद्ध करने गए थे तब वहां उनकी भेंट ईश्वरपूरी नमक संत से हुई। संत ने निमाई को कृष्ण–कृष्ण रटने को

कहा, तभी से इनका सारा जीवन बदल गया और हर समय भगवान श्री कृष्ण के प्रति निष्ठा और विश्वास के कारण इनके असंख्य अनुयायी हो गए।

सर्वप्रथम नित्यानंद प्रभु और अदैत्याचार्य महाराज उनके शिष्य बन गए। इन दोनों ने निमाई के भक्ति आंदोलन को तीव्रगति प्रदान की। इन दोनों शिष्यों के सहयोग से ढोलक, मृदंग, झांझ, मंजीरें आदि वाद्य यंत्र बजाकर और उच्ची स्वर में नाच–गाकर हरि नाम संकीर्तन करना प्रारंभ कर दिया।

महाप्रभु चैतन्य 18 शब्दीय, (32 अक्षरीय) कीर्तन महामंत्र की देन है इसे तारक ब्रह्म महामंत्र कहा गया है। इन्हें कलयुग में जीवात्माओं के उपचार हेतु प्रचारित किया गया जब वह कीर्तन करते थे तो लगता था मानो ईश्वर का आह्वान कर रहे हैं 1990 ई के संतप्रवर श्री पादकेशव संन्यास की दीक्षा लेने के बाद निमाई का नाम श्री कृष्णा चैतन्यदेव हो गए। 24 वर्ष की अवस्था में गृह आश्रम को त्याग कर संन्यास ग्रहण कर लिया।

उपसंहार

उपसंहार के तौर पर हम कह सकते हैं कि भारत में चैतन्य महाप्रभु के काल में पूरे भारतवर्ष में देश की सभ्यता, संस्कृति और धर्म विलीन होते जा रहा था। ऐसी परिस्थितियों में यदि सामाजिक और धार्मिक सुधारकों जैसे चैतन्य महाप्रभु का अवतार नहीं होता तो हमारे देश की सभ्यता, संस्कृति, धर्म समाप्त हो जाता। उस समय भारत में इस्लाम धर्म का प्रभाव दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहा था ऐसे समय में दलित और पीछड़े वर्ग के लोगों के लिए इस्लाम धर्म के प्रचारकों के प्रलोभन से मुसलमान बनते जा रहे थे जो हमारे देश की सभ्यता, संस्कृति और धर्म के लिए संकट आ गया था ऐसे महापुरुष का अवतार अगर देश में नहीं होता तो सनातन धर्म को बचा नहीं पाते तथा हिंदुओं के बीच जो एकता थी वह समाप्त हो जाती। भारत का धार्मिक इतिहास रहा है कि योगियों, संतो तथा विद्वानों के द्वारा भक्ति का सहारा लेते हुए आंदोलन की शुरुआत हुई इन लोगों का धर्म बचाने में बहुत बड़ी भूमिका रही।